राजस्थान के शेखावटी क्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनाएँ

डॉ. के.के.श्शर्मा

आदिकाल से ही मनु य का जिज्ञासु मन नयनाभिराम धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों, स्मारकों, दूर तक फैले रेत के टीलो, अथाह समन्दर, नदियों, जल प्रपातों, भव्य प्रासादों, राजमहलों, वनो, वन्य जीवन अभ्यारणो एवं प्रकृति के विविध रूपों को जानने समझने, आत्मोत्सर्ग करने सभ्यताओं एवम् संवर्द्धन का आनन्द लेने के प्रति उत्सुक एवम् लालायित रहा है। अपरिचित स्थानों, सभ्यता एवम्* संवर्द्धन को जानने समझने व परखने की जिज्ञासा वस्तुतः मनुष्य की स्वभावगत प्रवृति है और इस प्रवृति ही परिणाम है—पर्यटन। मनुष्य की यह सदैव जिज्ञासा रहती है कि वह नए स्थल के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे जिसके बारे में उसने सुना है या पढ़ा है। साथ ही स्थान विशेष पर व्यापार व रोजगार की सम्भावनाओं के बारे में जानकारी, स्वास्थ्य एवम् शिक्षा का लाभ, पर्यावरण व मनोरंजन से सम्बन्धित पूर्ण जानकारी की लालसा ने ही पर्यटन की सोच को जन्म दिया है। भारत आरम्भ से ही पर्यटन की सोच से जुड़ा रहा है। यहां के चारों धामों के तीर्थस्थल सम्भवतः पर्यटन की सोच की ही परिणति है। हिन्दु तीर्थस्थलों के चारों धाम अलग — अलग दिशाओं में होना इस बात की पुष्टि करते है कि इनकी स्थापना के पीछे उद्देश्य मनुष्य को अपने निवास स्थान के अतिरिक्त दूसरे स्थानो से अवगत कराने के साथ साथ घर से बाहर की दुनियों को देखने के अवसर दिलाना रहा है तीर्थ यात्रा वस्तुतः पर्यटन की उपज है इससे इन्कार नहीं किया जा सकता।[1] भारत आश्चर्य और सपनों का देश है। संसार की उच्चतम पर्वतमालाओं और तीन ओर से विशाल सागरो से घिरा यह देश अपनी प्राचीन इतिहास, मन्त्र—तन्त्र, यौगिक सिद्धियों व चमत्कारो के कारण आकर्षण का केन्द्र रहा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार स्वर्ग के देवता भी भारत—भूमि पर जन्म लेने के लिए तरसते है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों में बहुत विभिन्नता है। इस देश के कुछ भाग सदैव हिमच्छादित रहते है तो अन्य भाग मरूस्थल के रूप में हैं। यहाँ हरे भरे मैदान, पहाड़ियों से परिपूर्ण पठार विशाल सागर वन्य जीवन सभी कुछ तो है। इसके अतिरिक्त भारत की कला एक उल्लेखनीय विषय है। स्थापत्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला, न त्यकला, संगीतकला, सैलानियों को आकर्षित करती है। इस प्रकार पश्चिमी देशें के लोग भौतिकवाद से तंग आकर भारत की तपोभूमि के दर्शन करके आध्यात्मिक सुख प्राप्त करते है।

राजस्थान के पर्यटन विभाग ने देश—विदेश के पर्यटकों को ''पध ारो म्हारें देस'' का आकर्षक आमन्त्रण देकर राज्य के पर्यटन के विकास के प्रति सत्कार का संकल्प प्रकट किया है।[2] राजस्थान को पर्यटन के क्षेत्र में न केवल देश में अपितु विश्व के पर्यटन मानचित्र पर प्रमुखता से जाना जाता है। राजस्थान को सदियों से अपनी गौरवगाथा, कला एवं संस्कृति, तीर्थ स्थल प्राक तिक सौन्दर्य थार का रेगिस्थान, पशु पक्षी अभ्यारण एवम् ऐतिहासिक स्थलों के कारण देश विदेश में सराहा जाता है। भारत वर्ष में जिस प्रकार 'राजस्थान' का अपना विशेष स्थान है उसी प्रकार राजस्थान में 'शेखावटी' की अपनी खास प्रतिष्ठा है। शेखावटी क्षेत्र में सामान्यतया सीकर, झुन्झुनू व चूरू जिले का कुछ भू—भाग सम्मिलित है। इस प्रदेश पर कछवाहा—कुल की शेखावत शाखा के राजपूतों का सुदीर्घकाल तक शासनाधिकार रहा, अतः इसका शेखावटी नाम लोक—प्रचलित हुआ है। शेखावटी की खास विशेषता यह है कि शेखावटी का एक हिस्सा रेतीले टीलों की धरती है तो इसका एक भाग पहाड़ी है तथा वनस्पति से आच्छादित है। यहाँ एक तरफ पानी की कुछ कमी है तो दूसरी ओर की धरती सुजला सुफला भी है जो मालवा प्रदेश का सा दृश्य उपस्थित करती है।[3]

शेखावटी क्षेत्र में पर्यटन की अपार सम्भवनाऐं है क्योंकि प्रकृति ने शेखावटी को जो इन्द्रधनु विविधताऐं प्रदान की है उन्हें यहां के धर्म दर्शन साहित्य कला संस्कृति लोक जीवन और व्यवहार ने हजारों गुना बढ़ाया है। शेखावटी के प्राकृतिक और नैसर्गिक सौन्दर्य तथा संसाधनों के संदर्भ में उसके संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय के बाद यह जानने की स्वाभाविक जिज्ञासा भी होती है कि इतिहास और भूगोल ठीक—ठाक होने के बावजूद शेखावटी में ऐसा क्या है कि देशी—विदेशी पर्यटक इसकी ओर आकर्षित होते है। शेखावटी क्षेत्र में पर्यटन सम्भावनाओं पर दृष्टि डाले तो यहाँ के झुन्झुनू जिलें के सिंघाना गांव से खेतड़ी, नीम का थाना, उदयपुरवाटी, खण्डेला, हर्ष, रेवासा और जीणमाता होकर सांभर झील की तरफ गई अरावली पर्वतमाला शेखावटी को दो हिस्सों में विभक्त करती है। एक दक्षिण—पूर्वी भाग और दूसरा उत्तर पश्चिमी भाग। शेखावटी के दक्षिण पूर्व में नैसर्गिक सौन्दर्य, खनिज सम्पदा नालों और झरनों की राजलता और वनस्पति की विविध ाता का स्वरूप परिलक्षित होता है तो उत्तर पश्चिम में बालू रेत के ध ाोरों तथा इन्द्रधनु भित्ति चित्रों की विशालकाय हवेलियों का वैभव है।[4] शेखावटी की ये हवेलियां डेढ़ सौ से ढाई सौ साल पुरानी सेठों की हवेलिया है। जिनके भीतर और बाहर नयनप्रिय भित्ति चित्रों का अंकन मन मोह लेता है। पिलानी, बगड़, बिसाऊ, झुन्झुनू, महनसर, मण्डावा, चुड़ी—अजीतगगढ़, मुकुन्दगढ़, नवलगढ़, डूण्डलोद (झुन्झुनू जिला) रामगढ़, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़, सीकर (सीकर जिला) तथा चुरू, सरदारशहर, सुजानगढ़ रतनगढ़, छापर, बीदासर (चुरू जिला) आदि में स्थित गगनचुम्बी बहुरंगीय भित्ति चित्रित हवेलियां खुली कलादीर्घा (ओपन आर्ट गैलेरी) के रूप में जानी जाती है।'' शेखावटी के इन आकर्षक पक्षों का पर्यटन की दृष्टि से सन् 1980 में फ्रांस के लेखक 'वाजीराग' की 'द पेटेंड वाल्स ऑफ शेखावटी' में वर्णन किया गया जिसके पश्चात शेखावटी क्षेत्र विश्व के मानचित्र पर पर्यटन की दृ ट से महत्वपूर्ण बनता गया।[5] शेखावटी क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की भी अपार सम्भावनाऐं है क्योंकि इस जनपद में हिन्दू मुस्लिम समुदायों की आस्था के प्रतीक ध ार्मिक एवम् पवित्र तीर्थ स्थल है। शेखावटी के ऐसे प्रमुख धार्मिक स्थलों में सीकर जिले का जीणमाता मंदिर पीठ, टर्पनाथ का शिव मंदिर, झुन्झुनू जिले में राणीसती मन्दिर, नवलगढ़, लोहार्गल मन्दिर (शेखावटी का काशी) सालासर के हनुमान बालाजी, खाटू के श्यामजी सीकर और झुन्झुनू जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित शाकम्भरी देवी मन्दिर, नवलगढ़ के घोड़े वाले रामदेवजी, जसरापुर के समीप स्थित बाघेश्वर तीर्थ गंगियासर की रायमाता (झुन्झुनू) पिलानी में नरहड़ हजरत हाजिब शकरवार शाह की दरगाह और खंडेला का खंडेश्वर महादेव, रामगढ़ का शनि मंदिर व गंगा मन्दिर प्रमुख है।

''साम्प्रदायिक सोहार्द और सदभाव का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि जहाँ एक ओर लोकोक्तियों के मुताबिक सम्राट औरंगजेब को जीणमाता की आराधना करने पर कुष्ठ रोग से मुक्ति मिली वहीं दूसरी ओर पिलानी और चिड़ावा कस्बों के समीप स्थित पीर बाबा हजरत हाजिब शकरवार साहिब की दरगाह में श्री कृष्ण जन्मा टमी के दिन बहुत बड़ा मेला लगता है। यही स्थिति खाटू के श्याम मन्दिर की भी हैं जहाँ हिन्दू और मुसलमानों ने स्थितियों के अनुसार व्यवस्था कायम की है। जो साम्प्रदायिक सौहार्द एवम् पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।[6] स्थापतय कला की दृष्टि से भी शेखावटी सम द्धशाली माना जाता है। स्थापत्य कला की दृष्टि से शेखावटी के गढ़ बड़े ही महत्वपूर्ण है। शेखावटी में पग—पग पर किले मिलते है।

* सहायक प्रोफेसर, लोक प्रशासन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

यह किले अपने निवास, सुरक्षा सामग्री संग्रह के लिए आक्रमूण के समय अपनी प्रजा की सुरक्षा और सम्पति को छिपाने के लिए अधिक संख्या में बनाये गये। अधिक संख्या में किले बनाना महत्व की बात समझी जाती थी। शेखावटी में वैसे तो 50 किले हैं किन्तु ऐतिहासिक महत्व के किले झुन्झुनू का प्राचीन राजपूती गौरव का प्रतीक अखेगढ़ (दुर्ग), शौर्य की कीर्ति से झिलमिलाता दुर्ग ''फतेहपुर'' अमरसर गढ़, बाधोर का किला, भापालगढ़ का किला, नवलगढ़ का बालाकिला प्रमुख हे। ये सभी किलें सुरक्षा की दृष्टि से बनाये गये है जिनमें अधिकतर किले ऊंची–ऊंची पहाड़ियों पर स्थित है। किले बनाते समय ऊंची दीवारें और चारों और चौड़ी खाई और उसके भी दोनों और पक्की दीवार बनायी जाती थी। गढ़ का भीतरी भाग शासकों के निवास के रूप में काम आता था जो पूर्णतया सुरक्षित होता था वर्तमान में इन किलों एवं हवेलियों को हेरीटेज होटलों में तब्दील किया जाने लगा है। जिससे पर्यटक राजा–महाराजाओं की तरह शाही–ठाठ–बाठ अन्दाज में इन किलों एवं हवेलियों का लुफ्त उठाता है। स्थापत्य कला की दृष्टि से शेखावटी की छतरियों एवम् बावड़ियों को भी पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता हैं क्योंकि इन छतरियों के भित्ति चित्र एवम् शिलालेख यहां के बहादूरों की गौरवगाथाऐं सुनाते है जो लगभग तीन सौ वर्ष पुरानी कलाकृति है।[7] शेखावटी की महत्वपूर्ण छतरियों एवम् बावड़ियों में शर्दुलसिंह की छतरी, परसरामापुरा, जोकीदास की छतरी, उदयपुरवाटी लालसिंह की छतरी, मण्डावा झुन्झुनू की भूत बावड़ी, फतेहपुर की बावड़ी, सीकर की बावड़ी, देवी सिंह की छतरी सीकर, प्रकणेतों की छतरी चूरू, गंगाजी का मठ चूरू आदि प्रमुख है। पर्यटन की दृष्टि से शेखावटी के तालाब एवम् बांध भी महत्वपूर्ण माने है हालांकि शेखावटी क्षेत्र अर्द्धशु क जलवायु वाला क्षेत्र है किन्तु वर्षा ऋतु में हरा भरा हो जाता है तालाब एवमं बांध वर्षा के पानी से लबालब भर जाते है। शेखावटी के प्रमुख तालाब एवं बांधों में पन्नालाल शाह का तालाब खेतड़ी, समस तालाब झुन्झुनू कोट बांध, अजीतसागर बांध, प्रीतमपुरी झील श्रीमाधोपुर, खारे पानी की झीलें कोछोर, सेठानी जोहड़ा, चूरू आदि उल्लेखनीय हैं शेखावटी के सामाजिक जीवन में त्योहारों तथा उत्सवों का महत्व भी पर्यटन की दृष्टि से अच्छा माना जाता है क्योंकि इन उत्सवों से सामाजिक शक्ति में अभिवृति होती है तथा स्त्रियों, पुरुष व बच्चों में अनेकानेक विचारधारायें प्रस्फुटित होती है। जिससे सामाजिक एकता को बल मिलता हे।

''तीज त्यौंरा बाबड़ी, ले डूबी गणगौर''

अतः तीज इस रंगीली धरती पर अन्य त्यौहारों के आगमन का सूचक है तथा राजस्थान लोक संस्कृति का पोषक माना जाता है।[8] शेखावटी में तपती हुई धरती पर जब वर्षा की रिमझिम करती फुहारें पड़ती है तो उसकी सौंधी गंध से सारा लोक मानस महक उठता है। आसमान में उमड़ घुमड़ कर आती काली घटायें, मोर पपीहे की पिऊ–पिऊ की पुकार और हरे–भरे वृक्षों को देखकर मन मयूर नाच उठता है और जन जीवन एक नई, उमंग से लहरा उठता है। शेखावटी के पर्व एवम् त्यौहारों में तीज, गणगौर, आखातीज, रक्षाबंधन, दशहरा, दीपावली, मकर संक्राती, होली, बसंत पंचमी, गणेश चतुर्थी आदि महत्वपूर्ण है तथा मुसलमानों के उत्सवों में ईदुलजुहा, ईदुलाफितर, शब्बेरात, मुहर्रम आदि प्रमुख है। शेखावटी के मेले भी पर्यटकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, मेले भारत में ग्रामीण लोगों के जीवन में आनन्दमय अवसर है। इन मेलों में सामुदायिक नाच, धार्मिक प्रवचन, शक्ति और कौशल के करतबों का प्रदर्शन, मिठाई, दुकानें तथा ग्रामीण लोग विदेशी सैलानियों को आकर्षित करने की क्षमता रखते है। मेले पिछड़े लोगों, निरक्षर, आदिवासियों और अन्य श्रेणियों से अपील करने और सूचित करने के लिए, शिक्षित करने के लिए सही स्थान होने के अलावा आमदनी के भी स्त्रोत है। शेखावटी के मेलों में राणीसती मेला झुन्झुनू, नरहर पीर जी का मेला चिड़ावा, बाबारामदेव जी का मेला नवलगढ़, खाटू के श्यामजी का मेला, लोहार्गल का मेला, चिराना शीतलामाता का मेला उदयपुरवाटी, रामेश्वरदास जी का मेला खेतड़ी, सालासर मेला, चूरू आदि प्रसिद्ध मेले है। शेखावटी में कहावत है कि ''माँ'' कठेही ब्याह दिये, सौलणै के मेले पर आई रैस्यू''। आमतौर पर ये मेले समाज की आर्थिक पृष्ठभूमि में लगते है। मेलों का आयोजन रस्म के तौर पर तथा परम्परागत रूप से होता है। मेले एवम् उत्सवों में विदेशी सैलानियों के बढ़ते आकर्षण को देखकर पर्यटन विभाग द्वारा शेखावटी के तीनों जिलों क्रमशः सीकर, झुन्झुनू एवम् चूरू में शेखावटी उत्सव मनाये जाते है जिससे गीत, संगीत, नृत्यकला, ललितकला, नाटक, खेलकूद के क्षेत्र में छिपी प्रतिभाओं को आगे आने का मौका मिलता है तथा स्थानीय संस्कृति का बाहरी जगत से परिचय भी होता है। शेखावटी में आने वाले पर्यटकों की संख्या पर दृष्टि डाले तो स्पष्ट होता है कि यहां पर्यटक आगमन लगातार बढ़ते क्रम में है शेखावटी में जहां सन् 2001 में लगभग 1.17 लाख देशी विदेशी पर्यटक आये जो नवम्बर 2007 में बढ़कर 2.24 लाख हो गये जो अब तक सर्वाधिक मानी जाती है।[9] शेखावटी में पयर्टकों के बढ़ते आगमन से पर्यटन से जुड़े लोग काफी उत्साहित है वे इसमें आशा की नई किरण खोज रहे हे। शेखावटी में विदेशी पर्यटक ओपन आर्ट गैलेरी के रूप–विलास को देखने ही नहीं आते बल्कि इन सबके अलावा पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है–शेखावटी का ग्रामीण पर्यटन जिसमें शाही ठाठ–बाट वाली दिखावटी खातिरदारी से दूर गांव की अपनत्व भरी मेहमानबाजी, मेमनों से खेलना, कुट्टी मशीन चलाना, चुल्हें में फूंकनी मारना, लहरिया पहनना आदि परम्परायें पर्यटकों को भाने लगी है, शेखावटी क्षेत्र अर्द्ध रेगिस्थानी क्षेत्र होने से यहां आने वाला पर्यटक कैमल सफारी तथा घुड़सवारी का भरपूर आनन्द उठाता है साथ ही पहाड़ी क्षेत्रों की यात्रा उनके लिए रोमांचकारी होती है।[10]

शेखावटी क्षेत्र की जलवायु विशेष रूप से शीत ऋतु पर्यटकों के लिए अच्छी मानी जाती है। इस बात को सामने रखते हुए यहां हैल्थमेडिकल ट्यूरिज्म, इकों टयूरिज्म तथा रिर्सच ट्यूरिज्म के क्षेत्र में भी पर्यटन की सम्भावनायें बढ़ती जा रही है। शेखावटी उत्सवों के माध्यम से बनी शेखावटी की पहचान को पर्यटन विभाग ने अपने पर्यटन कलैण्डर में स्थान देकर इसे राज्य स्तरीय पहचान दे दी है। यह सिलसिला जारी रहा तो एक दिन शेखावटी उत्सव राष्ट्रीय पर्यटन कैलेण्डर का हिस्सा भी बन जायेगा। तब पर्यटन का स्वर्ण त्रिभुज जो अभी राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, आगरा और जयपुर के तीन कोणों को मिलाकर बना है, पर्यटन का चतुर्भुज बन जायेगा तथा शेखावटी को एक राष्ट्रीय पर्यटन स्थल की मान्यता मिल जायेगी।

lUnHk xzUFk lwph

1. ए.के.भाटिया V;fjTe Moyieb.V] fiafliy ,oa izfDVlst स्टर्लिंग पब्लिशर्स नई दिल्ली 1996 पृ.93
2. लक्ष्मीनारायण नाथूरामका jktLFkku dh vFkZO;oLFkk] कालेज बुक हाउस, जयपुर 2006 पृ. 214
3. टी.सी.प्रकाशः 'ks[kkoVh oSHko शेखावटी इतिहास शोध संस्थान, शिमला, झुन्झुनू 1993 पृ.4
4. तारादत्त निर्विरोध गाथा 'ks[kkoVh dh jRuks okyh ekVh कविता प्रकाशन झुन्झुनू पृ.20
5. लक्ष्मीकांत जांगिड़ नवलिका ^^'ks[kkokVh vkd"kZd D;ks]^ प्रकाशक नवलगढ़ महकता कमेटी पृ.12
6. vdqj एम.आर.मोरारका फाउन्डेशन प्रकाशक मुम्बई पृ.139
7. डॉ. गोपीनाथ शर्मा jktLFkku dk lkaLd`frd bfrgkl] राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृ.173
8. टी.सी.प्रकाश 'ks[kkoVh oSHko] शेखावटी इतिहास शोध संस्थान शिमला, झुन्झुनू 1993 पृ. 38
9. iz xfr izfronu पर्यटन विभाग राजस्थान पृ. 38
10. दैनिक भास्कर xkSjh ee dks Hkk;k 'ks[kkoVh] 27 सितम्बर 2007